अध्याय प्रथम

शोध विषय का परिचय

अध्याय प्रथम

शोध विषय का परिचय

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा मानव क्षमता निर्माण और पूंजी विकास के लिए एक अनिवार्य साधन है। इसने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) से संबंधित शिक्षण रणनीतियों और स्कूल प्रणाली में सीखने की शैलियों के नवाचार और नवाचार प्रसार को शिक्षा और सीखने की प्रभावशीलता के सभी स्तरों पर सूचित किया। बुनियादी में सामाजिक विज्ञान आधारित स्कूल विषयों और सेकेंडरी स्कूल पाठ्यक्रम और परीक्षा पाठ्यक्रम वास्तव में आईसीटी से संबंधित रणनीतियों और शिक्षण अधिगम प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए निर्देशात्मक आग्रह के उपयोग की सिफारिश करते हैं। हालांकि, सामाजिक विज्ञान विषयों के शिक्षकों को आईसीटी सामग्री का उपयोग करके विभिन्न वेबसाइटों में होस्ट किए गए सामाजिक आंकड़ों में होस्ट किए गए समाज में मनुष्यों पर समकालीन डेटा तक पहुंचने की आवश्यकता होती है। इसलिए शिक्षा के सभी स्तरों पर सामाजिक विज्ञान विषयों को पढ़ाने और सीखने के लिए आईसीटी संचालित शिक्षण सामग्री तक पहुंच बहुत महत्वपूर्ण है।

शिक्षा प्राप्त करने की प्रक्रिया जन्म से लेकर जीवन के अंत तक चलती है, और शिक्षा मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है । प्रारम्भ मे मनुष्य शिक्षा आपने घर-परिवार और समुदाय से प्राप्त करते थे, और आज के समय मे भी घर-परिवार और आस पास के समाज से शिक्षा देने वाले संस्थान मान जाता है, तथा ओपचारिक शिक्षण संस्थान भी है जो कि है, प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, उच्च माध्यमिक विद्यालय और कॉलेज आदि। जिसमें विधयार्थियों को शिक्षा दी जाती है। जिसे की उन का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास हो सके। जिस कारण शिक्षा को एक विशिस्ट स्थान प्राप्त है।

1.2 समस्या का कथन

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों की सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोगिता के संदर्भ में शिक्षकों की राय का अध्याय।

1.3 उद्देश्य

"सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के प्रयोग के प्रति सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की राय का अध्याय करना।"

1.4 कार्यकारी परिभाषायें

1.4.1 माध्यमिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा

अभी भी काफी लोगों को माध्यमिक शिक्षा क्या होती है? तथा माध्यमिक स्तर किसे कहते है? पता नहीं है, और इसका असली अर्थ क्या होता है ही मालूम नहीं है। जिस कारण कई बार प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय को एक मानते है। जब की दोनों ही अलग-अलग होते है। से की पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय वैसे तीन भागों मे प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय मे बाँटा जा सकता है। जो की बच्चों की आयु के तीन अवस्थाओ से संबंधित है। जैसे की पूर्व-प्राथमिक शैशव अवस्था, प्राथमिक बचपन अवस्था और माध्यमिक किशोर अवस्था। जिससे यह स्पष्ट होता है की, पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा के बाद जो शिक्षा आती है उसे माध्यमिक शिक्षा कहते है।

सामान्य रूप से माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जिसमे कक्षा ६ से १२ वी तक शिक्षा की व्यवस्था होती है। कुछ राज्यों मे कक्षा ११ वी १२ वी को उच्च माध्यमिक भी कहा जाता है। परन्तु कुछ भी कहा जाये वह माध्यमिक शिक्षा के ही भाग है।

कोठारी शिक्षा आयोग के अनुसार माध्यमिक स्तर शिक्षा का अर्थ वर्षा मे व्यक्त किया है, कोठारी शिक्षा आयोग के हिसाब से 7-8 वर्ष तक की प्राइमरी शिक्षा होती है और उसके बाद 4-5 वर्ष की माध्यमिक शिक्षा होती है।

भारत देश मे माध्यमिक शिक्षा को अत्यन्त महत्वपूर्ण शिक्षा स्तर के रूप मे माना जाता है। क्यों कि यह प्राथमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा को जोड़ने का काम करता है, और इस मे जो छात्र अध्याय करते है वेह किशोरावस्था के होते है जिस कारण माध्यमिक स्तर को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

माध्यमिक शिक्षा स्तर प्राथमिक शिक्षा से विश्वविद्यालयीन शिक्षा तक जोड़ने का काम करती है तथा इस के महत्व को हम निम्नलिखित बिंन्दुओ से समझ सकते है।

- यह प्राथमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी का कार्य करता है।
- इस स्तर पर किशोर/किशोरियों जो अध्याय करते है, उनके व्यक्तित्व की शैली पर निर्धारित होती है।
- यही से उनके व्यवसाय की तैयारी आरम्भ हो जाती है।
- माध्यमिक शिक्षा समाज व राष्ट्र के लिए भी अति महत्वपूर्ण है।
- यह व्यक्तित्व का विकास करती है।
- यह सामाजिकता व सामुदायिकता का विकास करती है।
- माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थी जीवन जीने की कला सीखते है।
- माध्यमिक स्तर विद्यार्थीयों को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करता है।

1.4.2 सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

सूचना और संचार तकनीकी का अर्थ उस सूचना सम्प्रेषण तकनीकी से है। जिसके माध्यम से सम्प्रेषण कार्य अत्यधिक प्रभावी तरीके से किया जाए। इस तकनीकी का उपयोग सूचनाओं का आदान-प्रदान अधिक गति से किया जा सके तथा इसका संबंध वैज्ञानिक तकनीकी के ऐसे संसाधनों व साधनों से होता है जिसके माध्यम से त्वरित गति से सूचनाओ का आदान-प्रदान होता है। इसे आम भाषा मे कहा जाए तो 'किसी भी जानकारी तथा सूचना को जानना समझना और उसे उसी रूप मे आगे भेजना, उसे ही सूचना और संचार तकनीकी कहते है।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार :- "एक व्यक्ति या संस्थान से दूसरे व्यक्तियों या संस्थान तक एक बात को पँहुचाना सूचना कहलाता है जबकि संचार का अर्थ है सूचना या अन्य किसी तथ्य का एक स्थान से दूसरे स्थान तक गमन।"

1.4.3 सूचना एवं संचार तकनीकी के अर्थ, परिभाषा, और शिक्षा मे उपयोग

सूचना और संचार तकनीकी, जिसे आई.सी.टी. भी कहा जाता है, यह एक सूचना तकनीकी अर्थात आ.सी.टी. के लिए एक बहुआयामी शब्द का रूप है जो एकसाथ संचार और दूरसंचार (टेलीफोन लाइन और वायरलेस सिग्नल) और काम्पुटर के एकीकरण के साथ-साथ आवश्यक है।

सूचना एवं संचार तकनीकी ज्ञान, कौशल तथा अवभिवृति आत्मसात करने के लिए ही एक नवीन तथा उभरती हुई विशिस्ट आवश्यकताओ की पूर्ति करने वाली एक अध्याय प्रक्रिय है। जिसमे समय और स्थान के आयामों का शिक्षण एवं अधिगम मे पूर्ति करने में कोई हस्तक्षेप नहीं होता है। इस तकनीकी के माध्यम से दूरस्थ विद्यार्थियों को भी उत्तम गति से शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उन कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सूचना के प्रेषण, संग्रहण, निर्माण, प्रदर्शन या आदान-प्रदान में काम आते हैं। सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की इस व्यापक परिभाषा के तहत रेडियो, टीवी, वीडियो, डीवीडी, टेलीफोन (लैंडलाइन और मोबाइल फोन दोनों ही), सैटेलाइट प्रणाली, कम्प्यूटर और नेटवर्क हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर आदि सभी आते हैं; इसके अलावा इन प्रौद्योगिकी से जुड़ी हुई सेवाएं और उपकरण, जैसे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ई-मेल और ब्लॉग्स आदि भी आईसीटी के दायरे में आते हैं।

1.4.4 सामाजिक विज्ञान

सामाजिक विज्ञान ज्ञान की एक शाखा है जो समाज, व्यक्तियों और समाज में समूहों के अध्याय पर केंद्रित है। सामाजिक विज्ञान विषय समाज में समूहों के बीच और उनके बीच संबंधों का अध्याय करते हैं, जिस तरह से वे समूहों और व्यक्तियों के रूप में रहते हैं। एक अकादमिक अनुशासन के रूप में, वे समाज और समाज के भीतर व्यक्तियों के बीच संबंधों से संबंधित हैं। विषय लोगों या व्यक्तियों के समूहों के सामाजिक जीवन के अध्याय से संबंधित हैं। वे अध्याय और सीखने का एक व्यापक

क्षेत्र हैं जिसके भीतर कई शाखाएँ हैं। इनमें भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र जैसे विषय शामिल हैं। सामाजिक अध्याय , माध्यमिक विद्यालयों में सरकार जबकि तृतीयक संस्थानों में मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, पुरातत्व, अन्य।

भूगोल पृथ्वी के भौतिक का अध्याय है विशेषताएं और लोग, पौधे और जानवर जो दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में रहते हैं। इतिहास अतीत की घटनाओं और घटनाओं के रिकॉर्ड या खाते का अध्याय है। अर्थशास्त्र वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और बिक्री के तरीके का अध्याय है; जिस तरह से पैसे का प्रबंधन किया जाता है; एक समाज की व्यावसायिक गतिविधियाँ हैं। सामाजिक अध्याय पर्यावरण के साथ मानव अंतःक्रिया का अध्याय है और सामाजिक समस्याओं को हल करने में प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के माध्यम से मानव पर्यावरण को कैसे प्रभावित और प्रबंधित करता हैं। मनोविज्ञान मन का अध्याय है और यह किसी विशेष व्यक्ति या लोगों के समूह में व्यवहार को कैसे प्रभावित करता हैं। राजनीति विज्ञान राजनीति का अध्याय है, और जिस तरह से किसी देश में राजनीतिक शक्ति को साझा और प्रयोग किया जाता हैं। समाजशास्त्र मानव समाज का वैज्ञानिक अध्याय है, जिस तरह से यह व्यवस्थित है, और कार्य करता है और जिस तरह से लोग एक दूसरे के संबंध में व्यवहार करते हैं। मानव विज्ञान मानव, समाज, रीति-रिवाजों और विश्वासों का अध्याय हैं। पुरातत्व उस समय के औजारों, हड्डियों, इमारतों और अन्य चीजों को देखकर किया गया प्राचीन मानव समाज का अध्याय हैं, जो स्थलों की खुदाई और भौतिक अवशेषों के विश्लेषण (एनटीआई, 2015) के माध्यम से पाया गया है। सामाजिक विज्ञान समाज को सीखने और अध्याय करने के अपने वैज्ञानिक तरीके के लिए जाना जाता है। अनुशासन के प्रभावी शिक्षण और सीखने के लिए कंप्यूटर असिस्टेड इंस्ट्रक्शन (सीएआई) जैसी नवीन तकनीकों की आवश्यकता होती है। यह समाज की बेहतर समझ के लिए शिक्षण के नवीन तरीकों के उपयोग पर जोर देता है। कभी-कभी, यह गणित या सांख्यिकी से उधार लेकर आंकड़ों और विश्लेषण का उपयोग करता है। यह डेटा संग्रह, फील्ड वर्क और आईसीटी के आवेदन के माध्यम से समाज में सेट-अप के बारे में जो कुछ पता चलता है, उसके विश्लेषण के माध्यम से समाज पर अपनी गतिविधियों को चलाने में एक व्यवस्थित

तरीका अपनाता है। सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में शिक्षण और शिक्षण सामग्री शामिल है जो आईसीटी सामग्री हैं। इनमें शामिल हैं: इंटरनेट, सीडी-रोम, वृत्तचित्र, सिमुलेशन गेम, ड्रिल और अभ्यास, ट्यूटोरियल और सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, पारिवारिक जीवन शिक्षा पर वृत्तचित्र और सिमुलेशन सामग्री जो सामाजिक विज्ञान से अपेक्षित हैं शिक्षकों को सामाजिक विज्ञान विषयों के शिक्षण और सीखने को सुविधाजनक बनाने और बढ़ाने के लिए (एनईआरडीसी, 2007)

1.4.5 शिक्षा मे आ.सी.टी. सामग्री का उपयोग

शिक्षण संस्थानों में विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री का उपयोग किया गया है। उदाहरण के लिए, चॉक बोर्ड, बुलेटिन बोर्ड, ओवरहेड प्रोजेक्टर और कंप्यूटर। वास्तव में, कंप्यूटर एक निर्देशात्मक सामग्री नहीं है; यह कई शिक्षण सामग्री का संयोजन है। उदाहरण के लिए, पावर प्वाइंट पर व्याख्यान प्रस्तुत किया जा सकता है, या अन्य सॉफ्टवेयर, कंप्यूटर को बड़ी कंप्यूटर स्क्रीन से जोड़ा जा सकता है और चॉकबोर्ड के रूप में उपयोग किया जा सकता है। सीडी-रोम और फ्लॉपी डिस्क का उपयोग बड़ी मात्रा में सूचनाओं को संग्रहीत करने के लिए किया जा सकता है, उदाहरण के लिए कक्षाओं में एक चित्र, एक अनुकरण, एक फिल्म, आरेख या एक व्याख्यान दिखाया जा सकता है। इंटरनेट और ईमेल का उपयोग कक्षाओं में कंप्यूटर के हिस्से के रूप में एक निर्देशात्मक सामग्री के रूप में किया जा सकता है। फिर शिक्षक ऑनलाइन जा सकते हैं और प्रासंगिक विषय या शोध आधारित लेख ढूंढ सकते हैं। कंप्यूटर गेम एक और तरीका है जिससे कंप्यूटर को कंप्यूटर आधारित निर्देशात्मक सामग्री के हिस्से के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है (मलिक, 2005)

1.5 सिमाकंन

अध्याय भोपाल जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों तक था । जिस में माध्यमिक विद्यालयों के सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों का सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग तथा उन के संबंध की राय का अध्याय किया गए है